कौन हो तुम

यह कौन
मुँह अँधेरे
लिखने लगता है
सुरमयी सुबह।

यह कौन
सुनहरी शाम की गवाही में
स्याह उड़ेल देता है आकाश में
और अँधेरी रात लिखता है
कभी
बिखरा जाता है उजियारा
और चाँदनी रात की शीतलता लिखता है ।

यह कौन
पहाड़ों के खुरदुरे शरीर से
बहा लाता है निर्मल जलधारा
और
नदी लिखता है ।

यह कौन
धुँध को बटोरकर
धूप की आहट के पहले
हीरे की चमक सा
पत्तों पर ओस लिखता है ।

यह कौन
मीलों तक फैलाता है
वृक्षों की श्रृखंला
और जंगल बियाबान लिखता है ।

यह कौन
सिद्धहस्त घुड़सवार की तरह
चढ़ता है सूरज के घोड़े में
पलक झपकते क्षणों में अर्धवृत खींचता है
और इन्द्रधनुष लिखता है ।

यह कौन
बादलों का पंख बन जाता है
उड़ता/तैरता है
और गर्जना के साथ बारिश की बुँदे लिखता है ।

यह कौन
किसान के पसीने को
धरती के भीतर सोखता है
और बारिश में मिश्रण कर
लहलहाती फसल लिखता है ।

यह कौन
फूलों को रंग बिरंगे परिधान बाँटता है
और पलाश/गुलाब/मोंगरे की
महकती सुगंध लिखता है ।

यह कौन मुठ्ठियाँ खोलकर
बिखेर जाता है आसमान में चमकती गोटियाँ
और
टिमटिमाते तारे लिखता है ।

यह कौन
बाँस के फूल से अनुबंध कर
कर्णप्रिय संगीत बिखेरता है
और
बाँसुरी लिखता है ।

अभिभूत हूँ मैं
और हम सभी
तुम्हारी कृति से
कौन
तुम कौन हो
कौन हो तुम ।

सृष्टि एक कल्पना

हम सभी अचम्भित हैं
कि इस नीले आसमान के ऊपर क्या होगा
किस पर टिकी है यह धरती
हलचल है कब से इन समुन्दरों में
सब कुछ बंद किताब सा है
वह बंद किवाड़ है
जो फिर न खुल सकेगा ।

सोचता हूँ
कब पहली बार लाल सुबह
पंख फड़फड़ाती धरती पर उतरी होगी ।

कैसा लगा होगा धरती को
जब पहली बार
उसने धूप को ओढ़ा होगा ।

कब पहली बार
हवा की किताब के पहले पन्ने खुले होंगे
और धरती के पोर-पोर में
गुनगुनायी होगी हवा ।

कब पहली बार
आकाश से मोतियों की तरह
नन्ही-नन्ही बूंदे गिरी होंगी ।

कैसा लगा होगा
किसी नन्हे पौधे को
मिट्टी के भीतर से उगना पहली बार ।

आँख भर आई होगी धूप की
जब पहली बार अगले दिन के लिए
शाम की लालिमा के साथ वह लौटी होगी ।

कब पहली बार
मानव की रचना कर
पृथ्वी पर उतारा गया होगा ।

कब पहली बार
किसी कन्या ने गर्भ धारण किया होगा
और कहलायी होगी माँ ।

कब पहली बार
आदमी का मौत से हुआ होगा साक्षात्कार
जो उसकी सोच में भी नहीं था ।

कब पहली बार
अस्तित्व में आयी होंगी लकीरें
और आदमी के माथे की परेशानियाँ बनी होंगी ।

कब पहली बार
लकीरें उठ खड़ी हुई होंगी
और आदमी ने धरती को बाँटा होगा
जिसका बाँटा जाना बंद होने के अब सारे रास्ते बंद हैं ।

अंतिम विकल्प

गोबर से बने
उफलों में
भागकर आना चाहती है
आग ।

अनाज पककर
चले गये गोदामों में ।

बिचौलिये
खड़े हैं अपने हिस्से ऊगाहने के लिये ।

जिसके पास सिक्का है
वह
आग को भगाकर
उफले तक ले आएगा ।

जिसके पास नहीं है
वह
अनाज
बिचौलिये
और उफलों के बीच
भूख बनकर बैठा रहेगा
विकल्प यह है
कि वह
सरकार की दया का पात्र बने
या सगे-सम्बंधियों/पड़ोसियों का
या फिर मौत का दया का पात्र बने
अंतिम विकल्प तो तय ही है ।

सुधीर कुमार सोनी